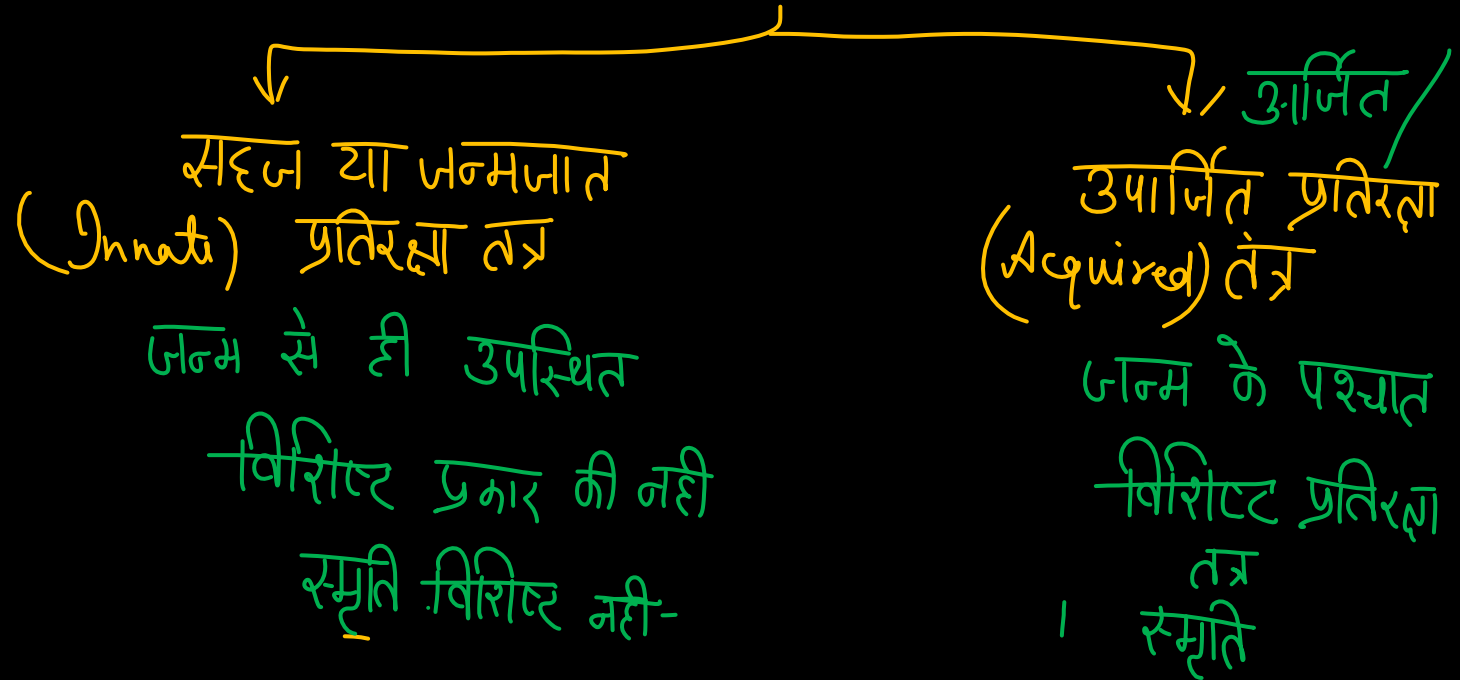


प्रतिरक्षा—

- मानव शरीर लगातार रोगाणुओं के सम्पर्क में आता रहता है ।
- जिनमें कुछ रोगाणु शरीर में प्रवेश करते है ।
- परन्तु हमारे शरीर के अन्दर पाए जाने वाला विशिष्ट तंत्र इन रोगाणुओं को मृत कर देता है ।
- यह तंत्र प्रतिरक्षा तंत्र कहलाता है ।

प्रतिरक्षा तंत्र के प्रकार





प्रतिरक्षा तंत्र दो प्रकार का पाया जाता है।

1. सहज प्रतिरक्षा तंत्र
2. उपार्जित प्रतिरक्षा तंत्र

रू-हज/जन्मजात प्रतिरक्षा तंत्र

५ प्रकार के अवरोध पास जाते।

- ① शारीरिक अवरोध - त्वचा, म्यूकस
- ② कार्यक्षम अवरोध :- रसायन (HCl, बुखार)
- ③ साइटोलिटिक अवरोध :- WBC की कोशिकाएँ
- ④ इन्टरफेरॉन - हिस्टामिन - सूजन, त्वचा लाल



सहज प्रतिरक्षा तंत्र –

- जन्मजात
- रोगाणु को शरीर में प्रवेश नहीं करने देता
- ब्राहा कारको के प्रवेश के सामने विभिन्न प्रकार के रोध खड़ा करने से ~~हसिल~~ होता है।



चार प्रकार के रोध होते है।

1. शारीरिक रोध – त्वचा, म्यूकस कोटिंग

2. कायिकीय रोध – रसायन , आमाशय में अम्ल, आंखों के आसू, लार



3. कोशिकीय रोध — श्वेत रूधिर कणिकाएं— न्यूट्रोफिल्स, मारक लिफोसाइट्स आदि रोगाणुओं को भक्षण करती है।

4. साइटोकाइन रोध — विषाणु संक्रमित कोशिकाएँ नामक प्रोटीन स्रवण करती है जो असंक्रमित को ओर आगे विषाणु-संक्रमण से बचाती है।

उपार्जित प्रतिरक्षा

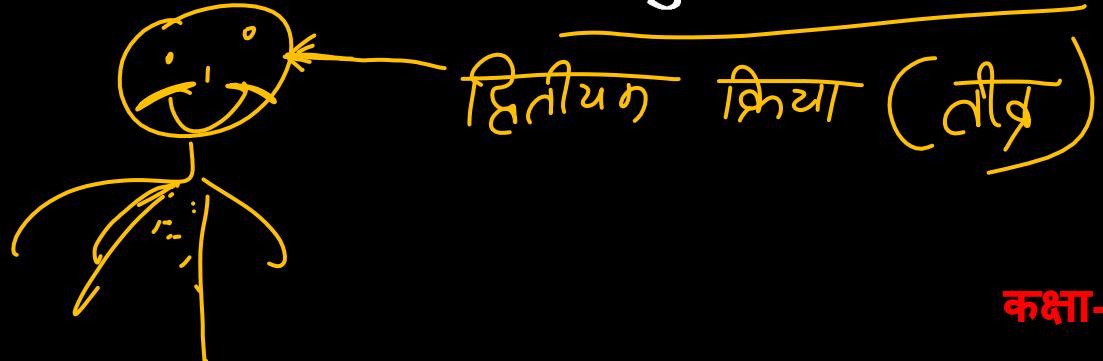
अर्जित

- यह प्रतिरक्षा तंत्र नहीं होता है।
- रोगजनक विशिष्ट है।
- इसलिए इसे अर्जित प्रतिरक्षा तंत्र भी कहते हैं।

इनकी निम्न चार विशेषताएँ हैं।

① प्रतिजन विशिष्टता— इस प्रतिरक्षा तंत्र में बनने वाली प्रतिरक्षा कोशिकाएँ रोगाणु के प्रति विशिष्ट होती हैं।

② प्रतिरक्षात्मक स्मृति— जब पहली बार किसी रोगजनक के सामना होता है तो यह निम्न तीव्रता से अनुक्रिया कहते हैं।





- इसके परिणामस्वरूप शरीर में प्रतिरक्षी कोशिका बन जाती है ।
- भविष्य में पुनः उसी रोगाणुओं के संक्रमण के द्वारा होने वाली अभिक्रियाएं बहुत तीव्र गति से होती है इसे द्वितीयक अनुक्रिया कहते हैं ।
- य अपनी स्मृति के आधार पर रोगाणु को नष्ट करते हैं ।



3

दीर्घ कालिता— एक बार बनने के बाद लम्बे समय तक प्रतिरक्षी कोशिकाएं बनी रहती है।

स्वयं व अन्य कोशिकाओं के मध्य भेद करना

4

MHC

